

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज



कार्यक्रम प्रतिवेदन

विषय— “विरासत से विकास : योग की भूमिका”

आयोजन तिथि : 02.06.2025

समय : पूर्वाह्न 11:30 बजे

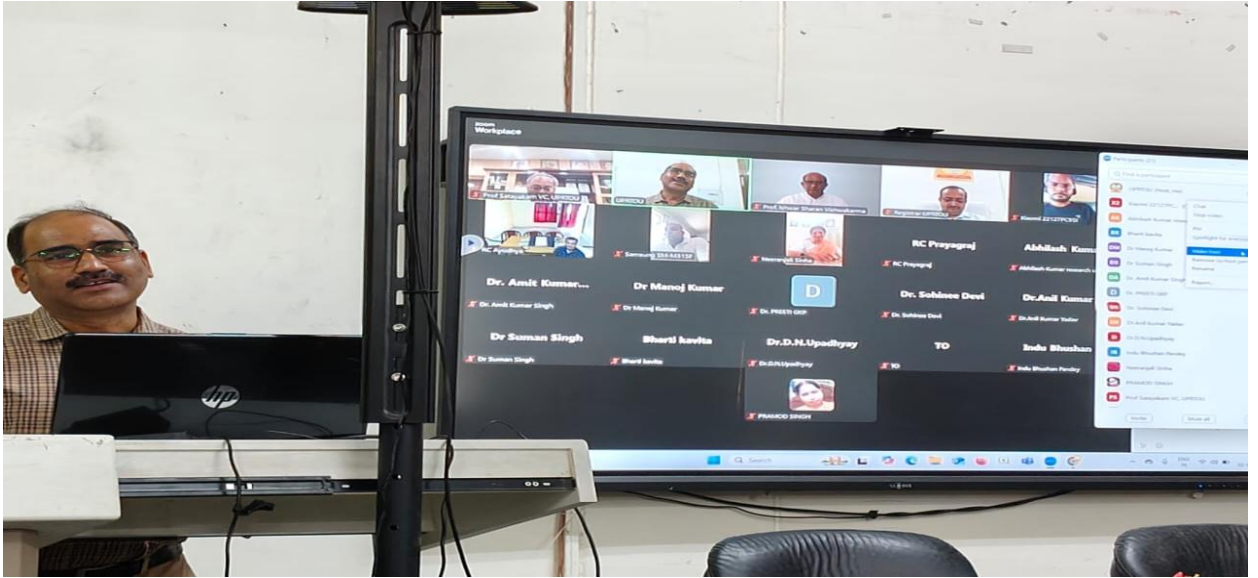
आयोजक : समाज विज्ञान विद्याशाखा

सरस्वती परिसर, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

कार्यक्रम प्रतिवेदन

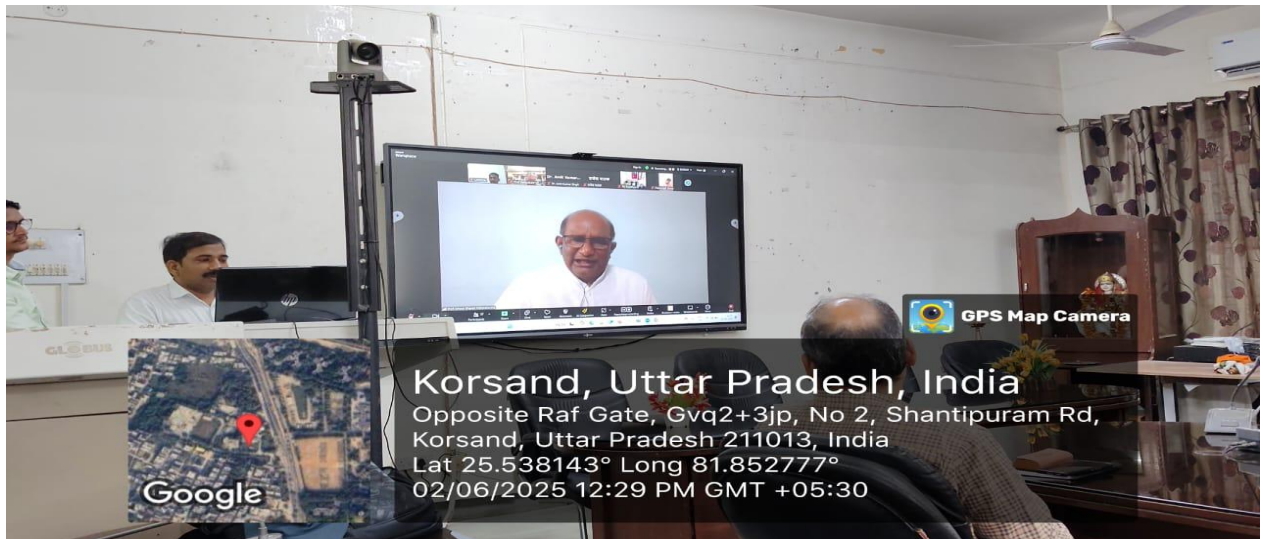
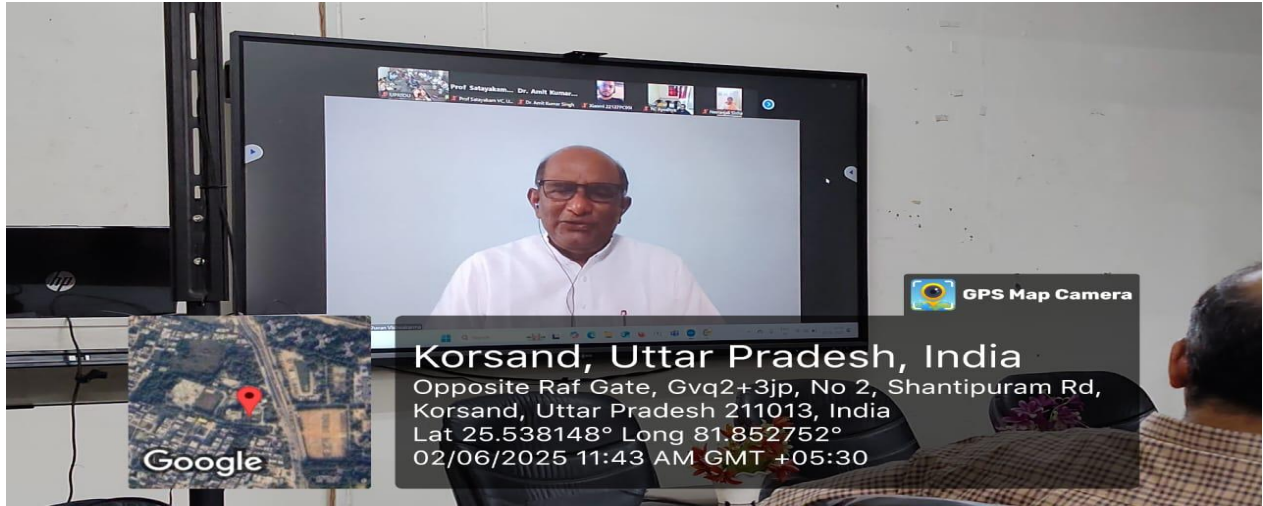
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पूर्व दिनांक 02/06/2025 को 'विरासत से विकास : योग की भूमिका' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, पूर्व आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य सत्यकाम जी ने किया।



वाचिक स्वागत एवं अतिथि परिचय देते हुए कार्यक्रम संयोजक प्रो. संतोषा कुमार, निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा

मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा जी ने कहा कि आप सभी लोग जानते हैं कि योग के महत्व को जानते हैं। उन्होंने कहा कि मन, शरीर शुद्धिकरण से किया गया कार्य जो सामाजिक जीवन में प्रगति उत्पन्न करता है, वह योग है। यह हमारे ज्ञान परंपरा की विरासत एवं उसकी सफलता है। ज्ञान के रूप में देखें तो योग एक महत्वपूर्ण अभिलेख प्रतिबिंबित होता है। मानव जीवन के सर्वोत्तम जगहों पर योग उपस्थित है। उसका भाव हमें समझना होगा। हमारे प्राचीन ग्रंथों में योग का उल्लेख मिलता है। उन्होंने कहा कि प्राण त्यागने की क्षमता या प्रक्रिया योग के ही माध्यम से किया जा सकता है। कई ऋषि-मुनियों ने योग साधना के द्वारा अपने शरीर को त्याग दिया। आपने कहा जैन, बौद्ध तथा भागवत जैसे धर्मों का सन्दर्भ प्रस्तुत करते हुए योग के महत्व को प्रतिपादित किया।



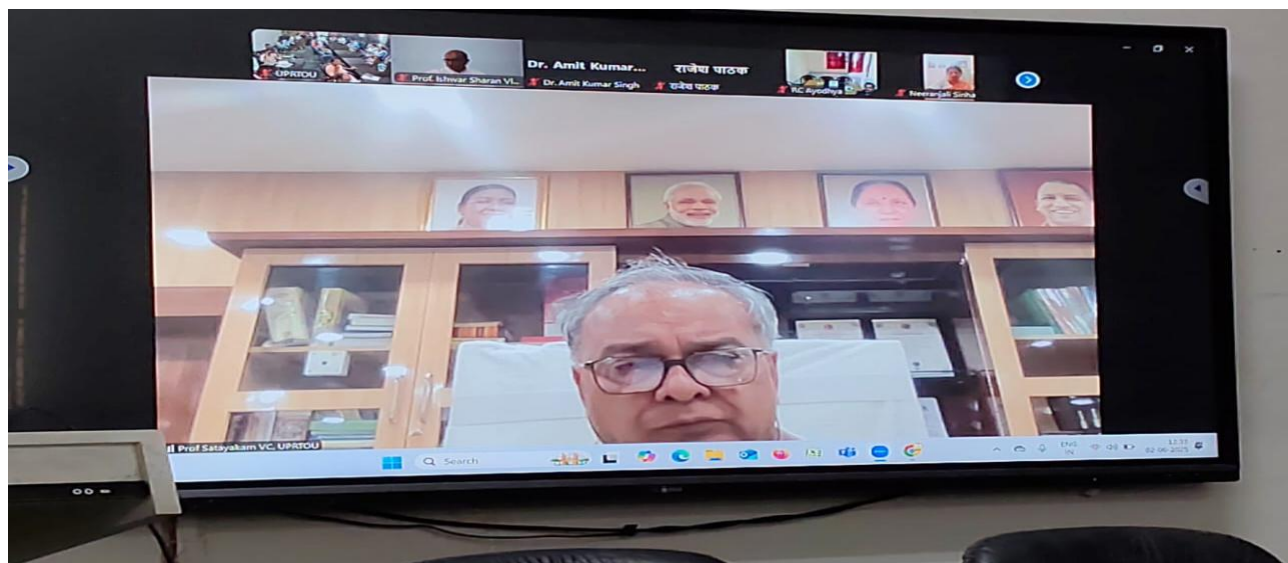
मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा जी

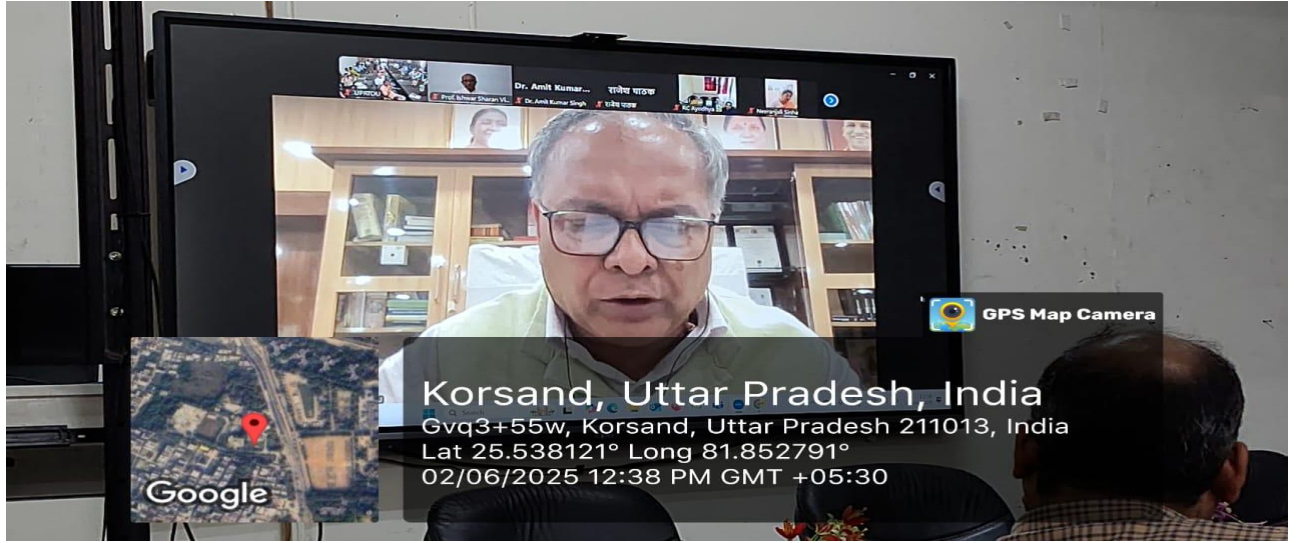
भारत की आर्ष परम्परा का उल्लेख करते हुए कहा कि आज पूरी दुनिया ने भारत के ऋग्वेद को विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ स्वीकार कर लिया है। यह भारत की ज्ञान परम्परा एवं वैश्विकता का ही प्रभाव है। उन्होंने विरासत, विकास एवं योग के अन्तर सम्बंधों का विस्तार तथा व्यापक सन्दर्भ देते हुए सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया। उन्होंने पुराणों, उपनिषदों आदि आर्ष ग्रन्थों में निहित मूल्यों तथा संस्कारों का उल्लेख करते हुए इसके महत्व को प्रतिपादित किया। उन्होंने अष्टांग योग के विविध आयामों का उल्लेख किया।

मुख्य वक्ता ने राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक योगदानों एवं महत्वों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र का निर्माण एवं विकास उस देश के मूल्यों एवं संस्कारों के आधार पर निर्धारित होते हैं। उन्होंने महाभारत, रामायण तथा श्रीमद्भगवद्गीता जैसे पवित्र ग्रन्थों का सन्दर्भ देते हुए उनमें निहित मूल्यों एवं नैतिक कर्तव्यों का उल्लेख किया। उन्होंने मथुरा के मोरा कूप अभिलेख का

सन्दर्भ देते हुए भागवत धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया योग के महत्व एवं उपयोगिता के महत्व को स्वीकार कर चुकी है। यह भारत की उस मेधा तथा प्रज्ञा का ही परिणाम है जिसको भारत के ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्षों की कठोर तप-तपस्या तथा साधना से यह अर्जित किया। उन्होंने कहा कि ये सभी भारत की विरासत तथा विकास के प्रतिबिम्ब हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य सत्यकाम जी अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि योग के विषय जो मुख्य वक्ता ने कहा, वह अत्यन्त सारगर्भित है जिसको जीवन में सभी को आत्मसात करना चाहिए। माननीय कुलपति जी ने कहा कि योग की परिभाषा, व्यापकता, अर्थ की गहराई के विषय में जो व्याख्यान दिया गया, निश्चित रूप से विद्वतापूर्ण तथा तार्किक है। उन्होंने कहा कि योग ही जीवन में विद्या, ईश्वर, अध्यात्म, ज्ञान, कौशल, है। योग को मनयोग से करने से पढ़ाई में मन लगाने लगता है। योग को मनोयोग से करने पर सफलता जरूर मिलती है। उन्होंने कहा कि योग के विभिन्न आसनो एवं आयामों को सभी शिक्षकों और शिक्षार्थियों को अपने जीवन में पालन करना चाहिए, योग की भूमिका का बड़ा महत्व मानव जीवन में है। उन्होंने कहा कि इस दिशा में विश्वविद्यालय में योग कार्यक्रम प्रतिदिन चल रहा है।





अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए विश्वविद्यालय के मा. कुलपति आचार्य सत्यकाम जी

माननीय कुलपति जी ने आगे कहा कि योग कोई कथन अवधारणा नहीं है। यह एक मूल अवधारणा है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एक इंजीनियर पुल बनाता है, सैनिक युद्ध लड़ता है, वह पूरे मनोयोग से कार्य को सम्पादित करता है। उसी प्रकार योग को पूरे मनोयोग एवं आत्मीयता से किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य पूरी की पूरी दिनचर्या ही योग पर आधारित होती है। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक होना सबसे बड़ा योग है। जो योगी नहीं है, उसके लोकतांत्रिक विचार नहीं हो सकते हैं। योग एक जीवन पद्धति है। योग को हम अपने जीवन से अलग नहीं कर सकते हैं। हमारी नई पीढ़ी योग से दूर चलती जा रही है। इसीलिए परिवार में योग न करने से विघटन पैदा हो रहा है। आज के बच्चे योग के महत्व को नहीं समझते हैं। इसीलिए पारिवारिक द्वेष और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

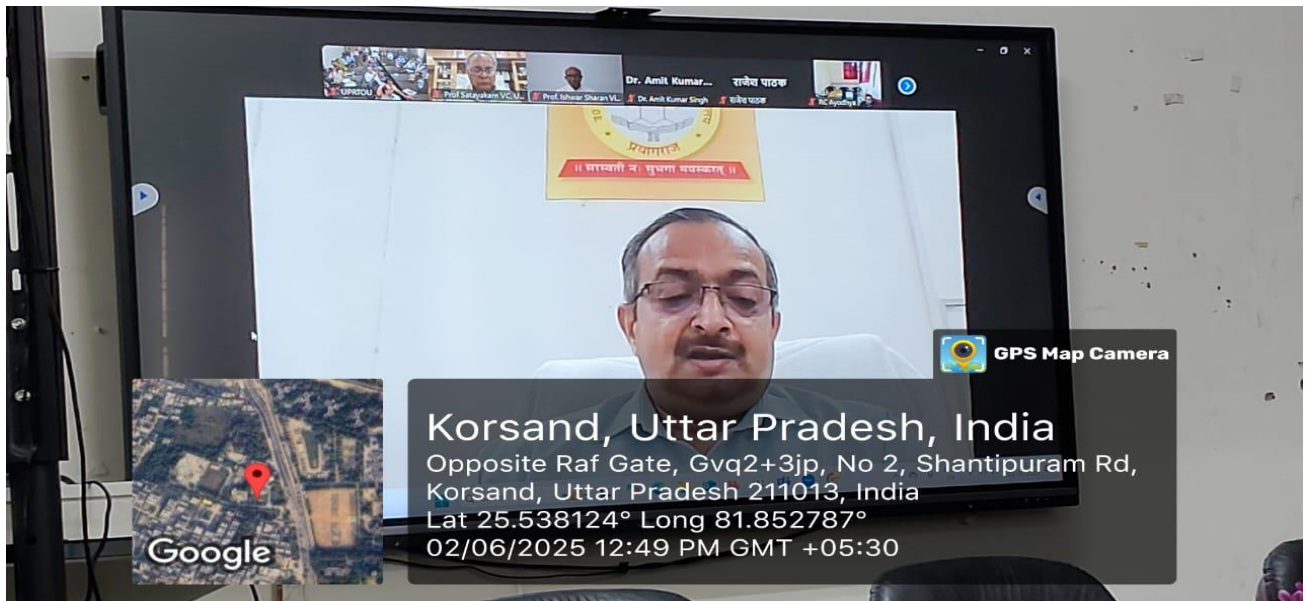


विश्वविद्यालय के तिलक शास्त्रार्थ सभागार उपस्थित शिक्षकगण, प्रतिभागीगण एवं शिक्षार्थीगण

माननीय कुलपति जी ने कहा कि विश्वविद्यालय एक परिवार है जिस प्रकार परिवार का मुखिया परिवार के प्रत्येक सदस्यों को एक साथ लेकर चलता है। उसी प्रकार विश्वविद्यालय का कुलगुरु होने के नाते विश्वविद्यालय का प्रत्येक सदस्य इस विश्वविद्यालय रूपी परिवार का अभिन्न अंग है। जहाँ पर हम सभी एक साथ बैठकर मिलकर कार्य करते हैं। यही भारत की विरासत, विकास तथा योग का सुन्दर तथा अद्भूत समन्वय है।



कार्यक्रम का संचालन एवं विषय प्रवर्तन करते हुए आयोजन सचिव डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, समाज विज्ञान विद्याशाखा,



धन्यवाद ज्ञापित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव कर्नल विनय कुमार जी

कार्यक्रम विश्वविद्यालय के तिलक शास्त्रार्थ सभागार में शिक्षकगण, अनेक प्रतिभागीगण एवं शिक्षार्थीगण ने प्रतिभाग किया।